बैरीः
सबसे बहादुर सेंट बर्नार्ड

लेखनः लिन हॉल

चित्रः अन्टोनियो कास्ट्रो

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

बैरीः सबसे बहादुर सेंट बर्नार्ड

लेखनः लिन हॉल

चित्रः अन्टोनियो कास्ट्रो

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा
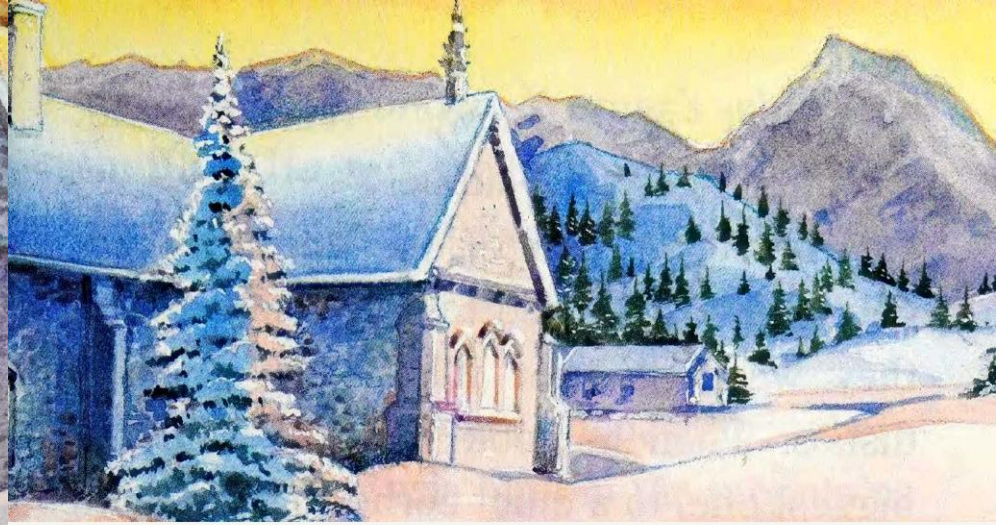
पहाड़ी दर्रे में पड़ी बर्फ, डूबते सूरज के कारण गुलाबी लग रही थी। पत्थरों से बनी इमारतों की दीवारें और खिड़कियाँ भी गुलाबी लग रही थीं। वर्नर मॉनेस्ट्री (मठ) के रसोई घर से गहरे बर्फ में बाहर निकला। उसके हाथों में कुत्तों के खाने से भरा बड़ा तसला था। उसने कुत्तों वाली बाड़े के भारी दरवाज़े को खोला।

''चलो, खाने का समय हो गया,'' उसने आवाज़ लगाई।

अन्दर बड़ा और लगभग खाली कमरा था। दीवार से टिकी फूस की ढ़ेरियाँ थीं। फूस से विशालकाय भूरे और सफेद कुत्ते निकले। उनकी संख्या कुल चौदह थी। उनमें जो सबसे छोटा था वह भी वज़न में वर्नर से भारी था।

“अरे धकियाने की ज़रूरत नहीं है,” वर्नर ने उन्हें बरजा। “खाना सबको मिलेगा।”

कुत्ते पास आने लगे, पर अब वे धकिया नहीं रहे थे। लगता था कि वे जानते थे कि वे कितने बलवान हैं। वर्नर ने सबके कटोरे भरे। तब आखिरी बड़े कटोरे को बड़े कमरे के एक शान्त कोने में ले गया।

उन कुत्तों के बीच से एक निकला और वर्नर के पीछे चल दिया। “यह रहा तुम्हारा खाना बैरी, मैंने सबसे बढ़िया टुकड़े तुम्हारे लिए बचाए हैं।”

खाना शुरु करने से पहले बैरी ने अपना सिर वर्नर की ठुड्डी के नीचे रखा और नाक से घुरघुराया। अपने विशाल जबाडों में उसने वर्नर का हाथ पकड़ा और उसे हिलाया, जैसे वह हमेशा करता था।

सेंट बर्नार्ड मॉनेस्ट्री जहाँ ये कुत्ते रहते थे स्वित्ज़रलैण्ड के ऊँचे पर्वतों में स्थित थी। उन दिनों मोटरगाड़ियाँ और राजमार्ग तो थे नहीं। यातायात के लिए सिर्फ घोड़े और पहाड़ी पगडंडियाँ थीं। पहाड़ों के उस पार निकलने का एक ही रास्ता लम्बी वादी से था, जो सेंट बर्नार्ड दर्रा कहलाता था।

उस दर्रे का नाम भी मठ के नाम पर पड़ा था। मठ में पत्थरों से बनी बड़ी इमारत थी, जहाँ इसाई पादरी रहते और काम करते थे। ये पादरी वे पवित्र पुरुष थे, जो एक ख़ास किस्म का काम करते थे। वे दर्रा पार करने में मुसाफिरों की मदद करते थे। सर्दियों में पहाड़ी पगडंडियों पर जमी बर्फ ख़तरनाक होती थी। कभी मुसाफिर अचानक हुए हिमस्खलन से बर्फ तले दब जाते थे। तब ये पादरी उन्हें तलाशने और बचाने का काम भी करते थे।

इस ख़ास काम के लिए वे एक अद्भुत किस्म के कुत्तों को पालते थे, जिन्हें सेंट बर्नार्ड ही कहा जाता था। वे बड़े और बलिष्ठ कुत्ते होते हैं जो बर्फ के तले दबे लोगों को खोज निकालते हैं।

वैसे तो वर्नर सभी कुत्तों से प्यार करता था, पर बैरी से उसे ख़ास प्यार था। बैरी भी वर्नर की ही तरह बचाव कार्य में भागीदारी करने के लिए अभी बहुत छोटा था।

"वहाँ बहुत ख़तरा है," पादरी वर्नर से कहते। "तुम्हें और बैरी को बड़े होने का इन्तज़ार करना होगा।"

खाना खत्म होने के बाद बैरी और वर्नर ने कुछ देर तक धींगामस्ती की। तब वर्नर ने खाने का तसला उठाया और रसोई की गर्मी की ओर बढ़ चला। उसका खाना भी अब तक तैयार हो चुका होगा। उसे अच्छी भूख लगी थी।

पर राह में ही फादर बैनेडिक्ट ने उसे आवाज़ दी, "वर्नर, मेहरबानी से इधर आओ।"

फादर बैनेडिक्ट दो हाँफते घोड़ों के क़रीब खड़े थे। उन घोड़ों पर सवार हो जो व्यक्ति आए थे, वे भी पास ही खड़े थे।

वर्नर ने तसला नीचे रखा और उनके पास गया। फादर बैनेडिक्ट ने कहा, "हमारे मेहमान आए हैं वर्नर। तुम उनके घोड़ों को मेहरबानी से अस्तबल ले जाओ।"

वर्नर उन दोनों को देख मुस्कुराया और उनके घोड़ों को अस्तबल ले गया, ताकि उनकी रात भी आराम से गुज़रे। जब उसने एक घोड़े की काठी के साथ वाले झोले उतारे, एक झोला उसकी बाजू से टकराया। झोले बहुत भारी थे। वर्नर ने काठी को अस्तबल के कोने पर टिकाया और झोले को खोल कर देखा।

उसने सोचा, "अगर मैं पादरी होता तो इस तरह तांक-झांक नहीं कर सकता था। मुझे खुशी है कि मैं पादरी नहीं हूँ।"

उस झोले के अन्दर एक भारी बन्दूक और एक चमड़े की थैली थी। वर्नर को पक्का लगा कि उसमें सोने के सिक्के भरे थे। उसका दिल तेज़ी से धड़कने लगा।

अस्तबल का दरवाज़ा तेज़ हवा के झोंके के साथ खुला। वर्नर चौंक गया। पर यह तो सिर्फ फादर बैनेडिक्ट थे। "इधर आएं फादर," उसने धीमी आवाज़ में कहा। उसे अब स्वीकारना था कि उसने तांक-झांक की है। पर लुटेरों की गोली झेलने से यह बेहतर था।

फादर बैनेडिक्ट अन्दर आए।

“देखिए” वर्नर ने कहा। ये लोग लुटेरे हैं। इस झोले में एक बन्दूक है, और एक सोने के सिक्कों की थैली भी। मुझे मालूम है कि मुझे तांक-झांक नहीं करनी चाहिए थी, पर . . .।”

फादर बैनेडिक्ट ने बड़े शान्त स्वर में कहा, “सेंट बर्नार्ड के दरवाज़े उन सबके लिए खुले हैं, जिन्हें आश्रय की ज़रूरत हो।”

“पर फादर! उनके पास बन्दूक है। वे हमें लूटने आए हैं।”

पर फादर सिर्फ मुस्कुराए। उन्होंने कहा, “ये हम नहीं जानते, है ना? हमारे एक मेहमान ने अपने झोले मांगे हैं। मैं उन्हें ले जाऊंगा। इससे पहले कि तुम्हारा खाना ठंडा हो, तुम अन्दर जाओ।” फादर ने झोले उठाए और उन्हें कंधों पर रख लिया।

रौशन रसोई घर में घुसते हुए वर्नर अपना सिर हिला रहा था। फादर बैनेडिक्ट की कभी न भंग होने वाली शान्ति उसे अक्सर उलझन में डाल देती थी। फादर भी वर्नर के पीछे-पीछे रसोई घर में आए। बड़ी और गर्म रसोई सूप और प्याज़ की खुशबू से महक रही थी।

लम्बी मेज़ पर बारह पादरी और दोनों मुसाफिर बैठे थे। वर्नर उन अजनबियों से कुछ दूर बैठा। उसने उनके चेहरे देखने की कोशिश की, पर यह मुश्किल था, क्योंकि अजनबियों के बाद छह चोंगाधारी पादरी बैठे थे।

आख़िरकार खाना खत्म हुआ। अजनबियों में से एक उठा। उसके हाथ में बन्दूक थी। “भोजन के लिए शुक्रिया,” उसने कहा। “पर अब मैं आपको आपके पैसों के लिए शुक्रिया कहना चाहता हूँ।”

वर्नर ने डर कर बन्दूक को देखा। तब अपने ठीक सामने बैठे पादरियों को। उन सबके चेहरे शान्त थे।

फादर बैनेडिक्ट बोले "हमारा संघ ग़रीब है। हमारे पास कोई पैसे नहीं हैं।"

लुटेरा हंसा, "मैं जानता हूँ। आप सब उठें और पास-पास खड़े हो जाएं।"

सभी पादरी और वर्नर मेज़ से उठकर खड़े हो गए। वर्नर को लगा कि वह अकेला था जो डर रहा था।

फादर बैनेडिक्ट बोले, "तो ठीक है, मैं आपको बेवकूफ नहीं बना सका। अब इस ओर चलें।"

उन्होंने दरवाज़ा खोला और आंगन में निकले। बाकी पादरी और वर्नर उनके पीछे चले, लुटेरे पादरियों के पीछे थे। फादर बड़ी शालीनता के साथ कुत्तों के बाड़े की तरफ बढ़े। वर्नर कुछ चकराया। वह जानता था कि उस जगह कोई ख़जाना नहीं था। उसने कुछ कहने को मुँह खोला।
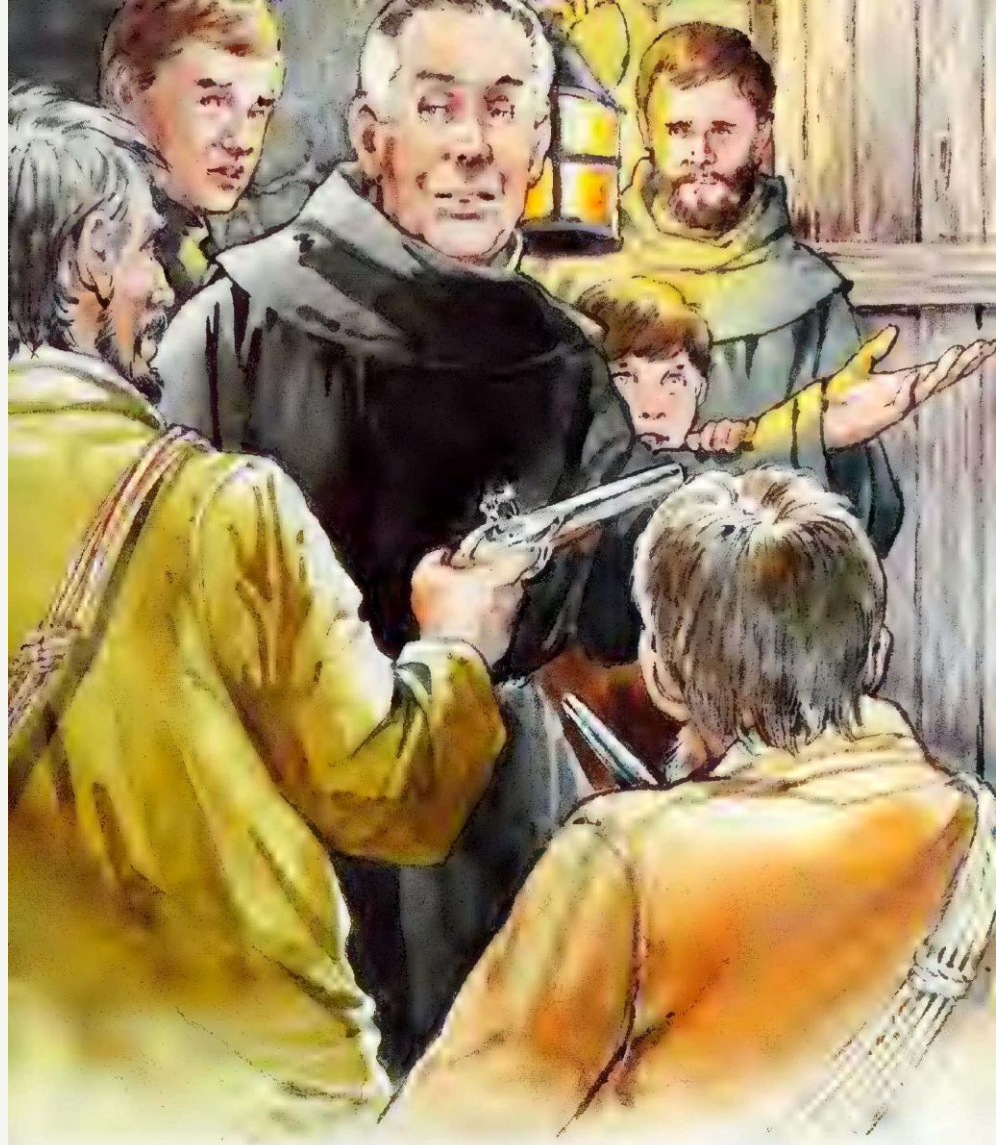
पास खड़े पादरी ने उसे कोहनी से घोंचा।

दरवाज़े के पास पहुँच फादर रुके, और एक ओर हो गए। वे बोले, "भले मानुसों, खुद बटोर लो।"

लुटेरे तेज़ी से आगे बढ़े। उन्होंने वह भारी दरवाज़ा बस खोला ही था कि, चौदह के चौदह भारी-भरकम कुत्ते उन पर लपके। उनके मुँह खुले थे। और चाँद की रौशनी में उनके दांत चमक रहे थे। जो सबसे बड़ा था, उसने लुटेरे की बाज़ू मुँह में पकड़ी, उसे हिलाया और गुर्राने लगा।

कुत्तों के धक्कों से लुटेरों की बन्दूक हवा में छिटकी और मुलायम बर्फ में दफ्न हो गई। डर से चीखते, चिल्लाते लुटेरे अस्तबल की ओर भागे। मिनटों में वे अपने घोड़ो पर सवार हुए, और अंधेरे में गुम हो गए।

पादरी हंसे और अपनी रौशन गर्म रसोई घर में लौट गए। वर्नर कुत्तों को उनके बाड़े में ले गया। उसके चेहरे पर चौड़ी मुस्कान थी। "बैरी तुम तो कमाल के चोर-भगाऊ हो। तुमने उन्हें सचमें दहला दिया। मुझे इससे बहुत ही खुशी हुई।"

बैरी हल्के स्वर में गुर्रा रहा था। उसने वर्नर की कलाई मुँह में थाम ली। उसकी पूंछ खुशी से हिल रही थी।

महीनों गुज़रे और जल्द ही गर्मियाँ आ गईं।

पहाड़ इतनी ऊँचाई पर थे कि गर्मियों में भी हर सप्ताह बर्फबारी होती थी। फूल खिलते, तो उनकी पंखुड़ियों पर भी बर्फ होती थी। गर्मियों में पहाड़ बेहद सुन्दर लगते थे। जून में बैरी की पहली सालगिरह आई, और इसी के साथ उसका प्रशिक्षण भी शुरु हो गया।

ब्रदर लूइगी कुत्तों के उम्र-दराज, पर अनुभवी प्रशिक्षक थे। वे हर दिन बैरी को दूसरे छोटे कुत्तों के साथ ले जाते। सभी कुत्ते तीन घंटों तक बर्फ में कूदते-फांदते। वर्नर उनके साथ देखने-सीखने, और जब हो सकता था ब्रदर की मदद करने जाता था। ब्रदर लुइगी जल्द ही इतने बूढ़े हो जाने वाले थे कि उन्हे बड़े कुत्तों को संभालने में दिक्कत होने वाली थी। वर्नर की उम्मीद थी कि वह किसी दिन उनकी जगह ले सकेगा।

प्रशिक्षण में वर्नर की भूमिका अमूमन कुत्तों से छिपने की थी। वह खुद को बर्फ में गाड़ लेता था, और तब तक वहीं रहता जब तक कोई कुत्ता उसे खोज न लेता। सभी कुत्ते इन्सानों को सूंघ कर निकालने में माहिर थे। पर बैरी जिसकी नाक बड़ी थी, वह दूसरों से विलक्षण था। वह लगभग हमेशा ही सबसे पहले वर्नर को खोज निकालता था। तब विशालकाय बैरी अपने पंजों से बर्फ को खोदता। अपना शरीर वर्नर के पास ला लेट जाता और उसके चेहरे को चाटने लगता। दोनों ही यों नाटक करते मानो वर्नर ठंड से जम चुका है। वर्नर बिना हिले-डुले पड़े रहने की कोशिश करता, पर बैरी की खुरदुरी जीभ से उसे गुदगुदी होती। कुछ ही देर बाद वह ठिठियाने लगता। बैरी की पूंछ खुशी से ज़ोरों से हिलती, और दोनों बर्फ में लोट-पोट हो जाते।

जब सर्दियाँ आईं बैरी को दर्रे के पास असली राहत यात्राओं में साथ जाने की अनुमति दी गई। वह मुसाफिरों को दर्रा पार करने का रास्ता दिखाता और मुसीबत में फंसे मुसाफिरों को तलाशता। अचानक हुए हिमस्खलन से कोई भी मुसाफिर दब सकता था।

और अगर समय रहते मदद न मिलती तो उसकी चपेट में आए मुसाफिर ठंड से जम जाते या फिर बिना हवा के उनका दम घुंट जाता।

हर सुबह बैरी ब्रदर लुइगी, या किसी दूसरे पादरी के साथ पहाड़ से नीचे जाता। वहाँ पगडंडी के पास एक पत्थरों से बनी झोंपड़ी थी। अगर उसमें कोई मुसाफिर बैठा होता, तो कुत्ते उसे ख़तरनाक दर्रे को पार करवाते। मुसाफिर को पहुँचा कर लौटने में उनका पूरा दिन लग जाता था।

सर्दियाँ खत्म होने तक यह साफ़ हो गया कि बैरी बचाव दल का सबसे उम्दा कुत्ता है। वह बर्फ में दबे लोगों को सबसे पहले तलाशता था। उन्हें तेज़ी से खोद निकालता था। उन्हें गरमाने की कोशिश भी सबसे अधिक बैरी ही करता था। कई बार दूसरे कुत्ते थक कर रुक जाते थे। पर बैरी उनके जमे हुए चेहरे को तब तक चाटता जाता था, जब तक कोई हरकत न होने लगती। तब वह खुशी से पगला जाता था।

कई साल गुज़रे, वर्नर पतला और लम्बा हो गया।

अब वह अपना पूरा समय कुत्तों को देता था। वह ब्रदर लुइगी के साथ हर दिन काम करता। वह उन्हें खाना देता, उनके साथ खेलता, और छोटे कुत्तों के प्रशिक्षण में मदद करता। वह पूरी तरह खुश था।

जब बैरी छह साल का हुआ, वर्नर अठारह का हो गया। उस साल पादरियों द्वारा अब तक झेली गई सबसे भयंकर सर्दी पड़ी। बचाव के लिए हर दिन निकलना पड़ता था। उन सर्दियों में मुसाफिरों की जान बचाने की कोशिश में मठ के आधे कुत्तों की मौत हो गई। कई पादरियों की भी जानें गईं। वे बर्फानी तूफानों में भटक गए, और उनके साथ गए कुत्ते उन्हें बचा न सके।

मार्च के अन्त में एक रात वर्नर और बैरी घर की ओर की पगडंडी से ख़रामा-ख़रामा लौट रहे थे। वर्नर का चेहरा ठंड से जकड़ गया था। बैरी भी थका लगा रहा था। दोनों के ही लिए ये सर्दियाँ मुश्किल रही थीं।

आसमान काला था। पहाड़ों की चोटियाँ जो दोनों ओर काफ़ी पास-पास थीं, अंधेरे में नज़र ही नहीं आ रही थीं। बस नीचे पड़ी बर्फ से हल्की चमक उठ रही थी।

अचानक ऊपर से कड़कने की आवाज़ आई। वर्नर और बैरी इस आवाज़ को बखूबी जानते थे और उससे डरते भी थे। वर्नर घुटनों के बल नीचे बैठा और उसने बैरी को भी अपने पास खींच लिया।

वह आवाज़ तब 'स्वुश्श्श्श्श' में तब्दील हो गई। पहाड़ के एक ओर से बर्फ धड़धड़ाती नीचे आ गिरी।

इसके बाद जब रात फिर से शान्त हुई, वर्नर खड़ा हुआ। उसका दिल तेज़ी से धड़क रहा था। "हम बाल-बाल बचे हैं बैरी," उसने कहा। "हम मर ही जाते। चलो अब घर चलते हैं, ताकि उन्हें बता सकें कि हम ज़िन्दा हैं।"

वह आगे बढ़ा। पर बैरी उसके पीछे नहीं आया। वह पहाड़ की ढ़लान की ओर ताकता खड़ा रहा। वह हवा को सूंघ रहा था।

"क्या वहाँ कोई? जाओ उसे तलाशो!"

पर बैरी बुत बना खड़ा रहा। लग रहा था मानो वह किसी उलझन में है। वर्नर को बेहद ठंड लग रही थी। वह इससे पहले अपने जीवन में इस कदर थका न था। ''चलो भी बैरी,'' उसने हुक्म दिया। उसके गले पर बंधे पट्‌टे को खींचा। पर बैरी ने अपने दो सौ पाउण्ड के शरीर को हिलने न दिया।

वर्नर ने अगले कई मिनटों तक बैरी को इस या उस ओर बढ़ने को उकसाया। पर बैरी टस से मस नहीं हुआ। वह उसी जगह बुत बना खड़ा रहा।

''ठीक है जब मर्ज़ी हो घर आ जाना। तुम रास्ता जानते ही हो।'' वर्नर उसे वहीं छोड़ घर की गरमी की ओर बढ़ा।

बैरी उस रात घर नहीं लौटा। अगली सुबह पाँच पादरी उसे ढूंढने निकले। वर्नर उन्हें उस जगह ले गया जहाँ उसने बैरी को छोड़ा था। पर वह वहाँ था ही नहीं। हवाओं और उड़ती बर्फ ने उसके पंजों के निशान ढ़क दिए थे।

पादरी पूरे दिन उसे तलाशते रहे, अगले दिन भर भी।

पर उन्हें बैरी का कोई सुराग नहीं मिला।

दूसरे दिन शाम वर्नर खोजी दल से अलग हो वापस लौटा। उसे दूसरे कुत्तों की देखभाल जो करनी थी। उसे अपना काम करना था। पर बैरी की तलाश को यों छोड़ना उसे अखर रहा था। वह जीवन में इतना दुखी कभी नहीं हुआ था। बैरी उसका सबसे क़रीबी दोस्त था, पर वर्नर उसे अकेला छोड़ आया था, और अब बैरी खो चुका था। कहीं वह मर ही न गया हो!

वर्नर रसोई घर में गया। उसने कुत्तों के लिए एक बड़े तसले में खाना तैयार किया। वह कुत्तों वाले बाड़े के दरवाज़े की ओर जा रहा था कि उसे वे रातें याद आईं, जब उसने बैरी को खाना खिलाया था, उसके साथ खेला था।

तब अचानक अस्तबल के पास छाया में उसे कुछ दिखा। एक कुत्ता जिसकी पीठ पर गठरी-सी बंधी थी, वह धीरे-धीरे चाँद की रोशनी में आया।

वर्नर तसला फेंक उसकी ओर दौड़ा। ''बैरी! शुक्र है खुदा का!''

बैरी बहुत ही आहिस्ता-आहिस्ता आगे बढ़ रहा था। सावधानी से एक-एक कदम धरता। जब वह वर्नर के पास पहुँचा उसकी पूंछ बेहद धीरे से हिली।

वर्नर ने उसके पीठ पर बंधी गठरी को खोला।

"फादर बैनेडिक्ट!" वह पूरे दम से चीखा। उसकी चीख की अनुगूंज पहाड़ों की चोटियों में सुनाई दीं "बैनेडिक्ट . . . डिक्ट . . . डिक्ट।"

बैरी की छाती के गिर्द एक औरतों वाला दुशाला बंधा था। उसके अन्दर वर्नर के हाथ एक शिशु से टकराए। उस नन्हे का शरीर जकड़ा हुआ था।

फादर बैनेडिक्ट और कुछ दूसरे पादरी दौड़ते हुए आए। उनके काले चोंगे हवा में उनके पीछे पंखों की तरह उठ रहे थे। उन्होंने बच्चे का मुंह खोल उसमें साँसें भरीं। उसके रक्त संचार को बढ़ाने के लिए उसके शरीर पर बर्फ मली। काफ़ी देर बाद बच्चा कुछ हिला-डुला तब ज़ोर से रोया।

जब पादरी लगभग जमे हुए बच्चे पर काम कर रहे थे, वर्नर बैरी को धीरे-धीरे कुत्तों के बाड़े में ले गया। उसने बैरी को खाना खिलाने की कोशिश की, पर वह इतना थका हुआ था कि चबा ही नहीं पा रहा था। जब वह सोने के लिए पुआल पर पसरा उसका सिर वर्नर की गोद में था। उसके जबाड़ों की ढ़ीली गिरफ्त में वर्नर की बाँह थी।

कई दिनों बाद शिशु की माँ का शरीर मिला। जब बैरी उस स्त्री तक पहुँचा होगा, वह बेहद कमज़ोर हो चुकी होगी। उसने मरने से पहले जस-तस अपने बेटे को बैरी की पीठ पर अपने दुशाले से बांधा होगा।

बचाव की इस घटना के बाद बैरी की शोहरत दुनिया भर में फैल गई। इंग्लैण्ड के तेरह साल के एक बच्चे ने बैरी के बचाव के किस्से सुन उसका एक चित्र बनाया। बड़ा होकर वह बालक सर एडविन लैण्डसीयर बना, जो कुत्तों के चित्र बनाने के लिए मशहूर हुए।

घटना के तीन वर्ष बाद फादर लुइगी एक बचाव अभियान में खो गए। जब वे नहीं लौटे फादर बैनेडिक्ट ने कुत्तों के बाड़े का दरवाज़ा खोला और बैरी से कहा कि वह अपने "मालिक" को खोजे।

बैरी ने उन्हें टनों बर्फ के नीचे से खोज निकाला। उस विशाल जीव ने खूब मेहनत की, पर तब तक बहुत देर हो चुकी थी। ब्रदर लुइगी प्राण त्याग चुके थे। वर्नर को भारी मन से प्रशिक्षक की ज़िम्मदारी उठानी पड़ी।

तीन साल और गुज़रे। अक्तूबर का महीना था और दिन ताज़ा और ठंडा था। पर रात होते ही साल की पहली ज़बरदस्त बर्फबारी हुई।

मठ के रसोई घर में तीन पुराने दोस्त अलाव में जलती आग के पास एक-दूसरे के साथ का मज़ा ले रहे थे। फादर बैनेडिक्ट और वर्नर आग के काफ़ी पास बैठे थे। बैरी उन दोनों के बीच कुछ दूरी पर था। उसे जलती आग का ताप नापसन्द था।

वर्नर अब खुद भी पादरी बन चुका था। उसकी उम्र चौबीस की हो गई थी। उसने अपना पैर उठाया और जूते के अगले हिस्से से बैरी के कुल्हे के पास सहलाने लगा। बैरी की आँखें बन्द रहीं, पर उसकी पूंछ फर्श पर थपकियाँ देने लगी। वह अपनी पीठ के बल लेट गया ताकि वर्नर उसकी छाती को भी सहला सके।

बैरी के सिर के गहरे भूरे हिस्से में कुछ सफेद बाल नज़र आने लगे थे। उसकी पीठ भी हल्की-सी झुकने लगी थी जिसका असर उसकी चाल में दिखाई देता था।

पर जब मठ के कुत्तों को हर सुबह दौड़ने के लिए निकाला जाता था, बैरी अब भी उतने ही उत्साह से नीली-सफेद बर्फ पर कूदता था।

कई मिनटों तक रसोई घर में चुप्पी छाई रही। वर्नर ने कहा, "मैं खुदगर्ज़ बन रहा हूँ ना?"

दोनों पुरुष एक-दूसरे के इतने क़रीब थे कि फादर को यह पूछना नहीं पड़ा कि उसका मतलब क्या है।

"बैरी जैसे दोस्त को छोड़ना आसान नहीं है," फादर ने कोमल स्वर में कहा।

"फिर भी यह उसका आखिरी साल होगा," वर्नर ने कहा। "यहाँ ऊपर सर्दियाँ किसी बूढ़े कुत्ते के लिए बड़ी ही कठिन हैं।" मुझे लगता है कि हम उसका इस्तेमाल बचाव दल के लिए नहीं करेंगे। हम उसे उसके साथ के लिए रखेंगे। तब अगली गर्मियों में जब हम पिल्लों को बेचने के लिए ले जाएंगे तो बैरी को भी लेते चलेंगे। वहाँ हमारे दोस्त उसकी देखभाल कर लेंगे। बैरी गर्मी भर सुस्ता सकेगा। वह इस विश्राम को अर्जित कर चुका है।"

फादर सोते हुए कुत्ते को देख मुस्कुराए। "हाँ, बैरी हमारे कुत्तों में सबसे उम्दा रहा है। उसके जैसे समर्पण के साथ काम करने वाले कुत्ते शायद ही फिर कभी मिलें। बैरी ने अकेले ही 40 जानें बचाई हैं। यह सचमें एक रिकॉर्ड है।"

"मुझे उम्मीद है कि इन गर्मियों में छोटे पिल्ले . . . ," वर्नर की बात में दरवाज़े की कुंडी खटखटाने की आवाज़ ने ख़लल ड़ाला। उसने फादर से नज़रें मिलाईं। मुसाफिरों के वहाँ पहुँचने के लिए बहुत देर हो चुकी थी। दोनों ने पत्थरों से बने लम्बे गलियारे को पार किया। उनींदा बैरी भी जम्हाइयाँ लेता उनके पीछे बढ़ा।

वर्नर ने दरवाज़ा खोला। उसे बाहर ठंड से थरथराता एक लड़का सीढ़ियों पर खड़ा मिला।

"अन्दर आ जाओ बच्चे," वर्नर ने कहा।
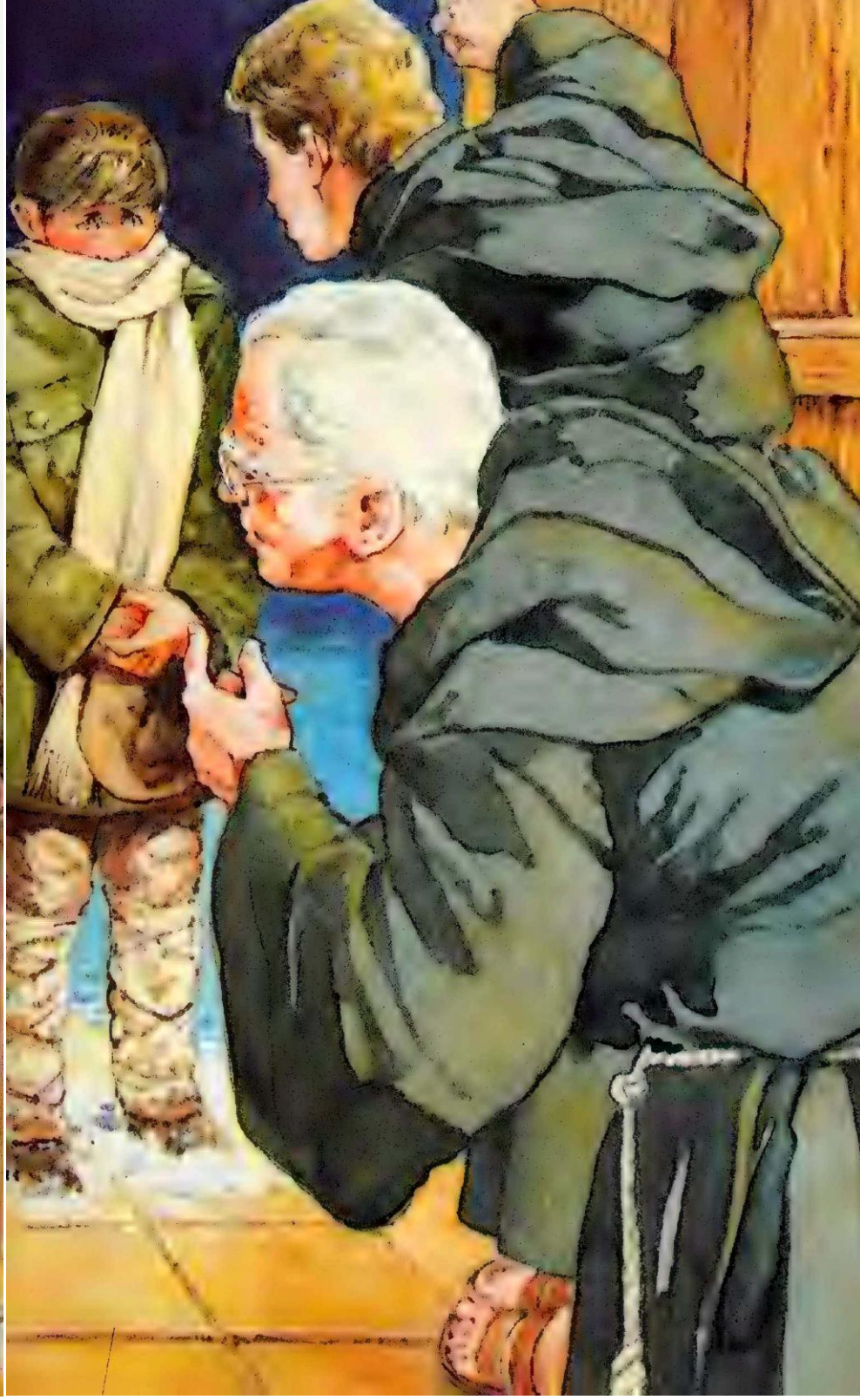
बच्चे को फुर्ती से रसोई घर ले जाया गया। क्योंकि उसके हाथ ठंड से अकड़ गए थे वर्नर ने उसका कोट उतारने में उसकी मदद की। पादरियों ने अलाव के अंगारों को उलटा-पलटा, और सूप का कटोरा खौलने को रख दिया।

जब लड़का बोलने की हालत में आया, उसने कहा, “मेहरबानी के लिए शुक्रिया।” वह छोटा और दुबला-पतला था। उसके कपड़ों से वह किसान का बेटा लगता था।

“मेरा भाई मार्टिन तीन दिन पहले घर से भाग गया। उसे सेना में भर्ती होने का हुकुम मिला था ।पर वह सेना में जाना ही नहीं चाहता था। सो वह चुपचाप घर से भाग गया। वह अपने साथ सिर्फ एक डबलरोटी और उसे काटने के लिए एक छुरी ले गया है। हमारी माँ ने कहा कि मैं आप लोगों से उसे तलाशने को कहूँ।” उसकी आँखें आसुँओं से चमक रही थीं। वह उन्हें छिपाने की कोशिश कर रहा था।

फादर बैनेडिक्ट ने पूछा, “क्या तुम्हें मालूम है कि वह किस दिशा में गया था?”

वर्नर इस बीच अन्य पादरियों को बुलाने और कुत्तों को जगाने जा चुका था।

कुछ ही मिनटों में बचाव दल तलाश के लिए निकल पड़ा - आठ पादरी और छह कुत्ते। वर्नर बैरी को रसोई घर में बन्द कर आया था। पर उस उम्र-दराज़ पर साहसी कुत्ते ने एक खुला दरवाज़ा तलाश लिया और वर्नर के पास दौड़ा चला आया!

पूर्णिमा का चाँद रात में उजाला बिखेर रहा था। बर्फ गिरनी बन्द हो चुकी थी।

पेड़, चट्टानें पादरी, सभी हल्की सुरमई बर्फ की पृष्ठभूमि में काले नज़र आ रहे थे। बचाव दल पहाड़ों के बीच उस जगह आगे बढ़ा जिसकी ख़बर लड़के ने दी थी। वहाँ पहुँच वे टुकड़ियों में फैले और एक निश्चित इलाके में तलाशने लगे। हर पादरी के हाथ में एक लम्बी छड़ी थी, जिसे वह बर्फ में घोंप कर जाँचता था कि कहीं मार्टिन हिमस्खलन में दब न गया हो।

बैरी ओर वर्नर दूसरों की तुलना में पहाड़ी से अधिक नीचे उतरे थे। वर्नर का दिमाग एक ओर तो मार्टिन की तलाश में लगा था, पर दिमाग का दूसरा हिस्सा यह सोच रहा था कि शायद वह आख़िरी बार बैरी की झबरी पूंछ के पीछे उन पहाड़ों पर चल रहा है, जिससे उन दोनों को बेइन्तहा प्यार था।

पिछले सालों में वर्नर की देखभाल में सैकड़ों कुत्ते रहे थे। उनमें से कई तो बैरी के बेटे और बेटियाँ थे। पर किसी में वह सहज चतुराई न थी जो बैरी की आँखों में झलकती थी। और उनमें से कोई भी इन्सानों की ज़िन्दगियाँ बचाने में इतना माहिर न था। कोई भी कुत्ता वर्नर के लिए इतना मायने नहीं रखता था।

पहाड़ी के ढ़लान पर वे दोनों अकेले थे। बैरी आगे चल रहा था, उसकी नाक बर्फ के क़रीब थी। अचानक वह रुका, उसने अपना भरी-भरकम सिर ऊपर उठाया, उसे धीरे-धीरे दाएं से बाएं घुमाया।

तब वह तेज़ी से ढ़लान के नीचे दौड़ा और देवदार के एक झुरमुट के पीछे ओझल हो गया। वर्नर ने उसे आवाज़ें लगाईं, और उसके पीछे दौड़ा।

अचानक एक चीख सुनाई दी, “आईईईई . . . भालू!”

वर्नर पेड़ों के पास पहुँचा और ठिठक गया। एक नौजवान पेड़ को पकड़े खड़ा था, उसके हाथ का चाकू खून से लाल था। उसके पैरों के पास बैरी पड़ा था।

ज़िन्दगी में पहली बार वर्नर ने इन्सान पर कोई ध्यान नहीं दिया। वह बैरी के पास घुटनों के बल बैठा और रोने लगा। बैरी की बगल और गरदन पर चाकू के अनेकों घाव थे।

पर खून के नीचे उसका विशाल दिल अब भी धड़क रहा था।

घंटे भर बाद मार्टिन और बैरी को स्ट्रैचरों पर लाद मठ ले जाया गया। लड़का मठ के सबसे गर्म कमरे में सो रहा था। उसका भाई उसके पास बैठा निगरानी कर रहा था।

बैरी रसोई घर में मुलायम कम्बलों पर लेटा था। वह बिलकुल भी हिला-डुला नहीं था। उसके गिर्द मौन काले चोंगाधारी पादरी खड़े थे, जिनकी आँखें में उसके लिए प्रेम आँसुओं के रूप में छलछला रहा था।

''वह काफ़ी बूढ़ा हो चुका है,'' फादर ने धीमी आवाज़ में कहा। ''इतना खून बह जाने से . . .।''

''वह ठीक होगा,'' वर्नर के जबाड़े इस कदर भिंचे हुए थे, कि उसके शब्द मुश्किल से निकले।
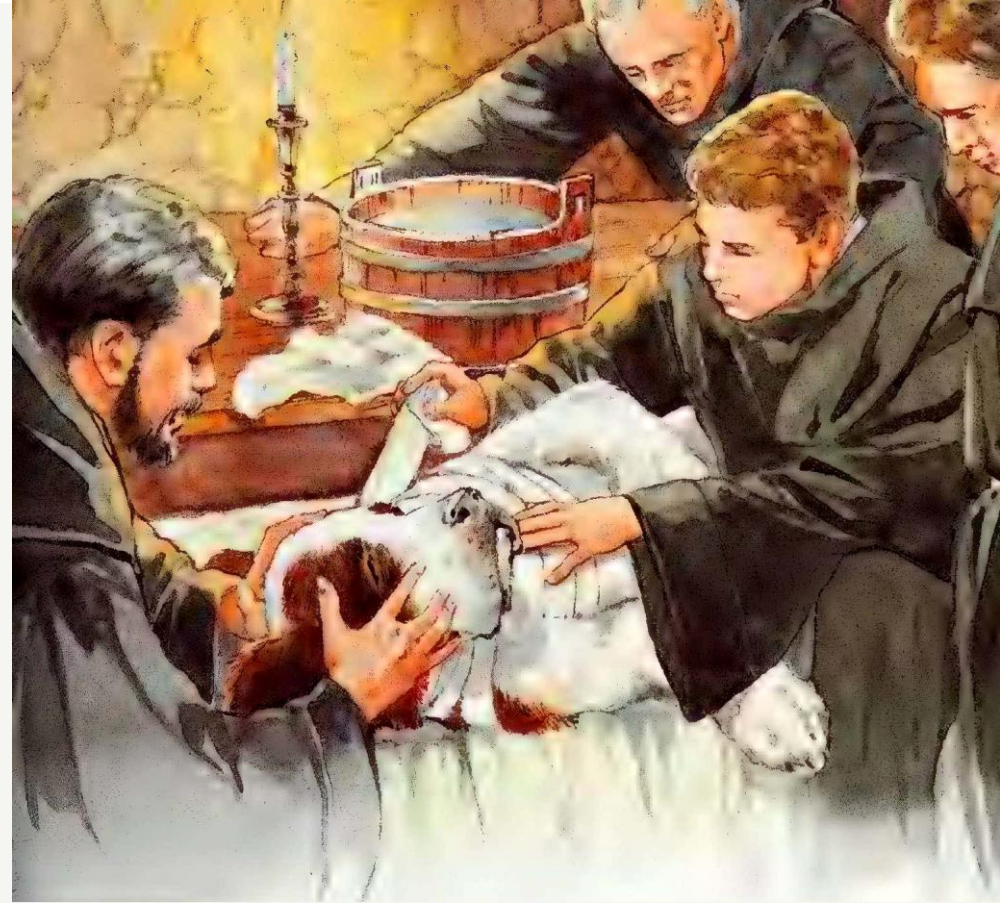
फादर ने वर्नर के कंधे पर हाथ रखा। ''उम्मीद करता हूँ कि तुम उस लड़के को दोष नहीं दोगे। वह ठंड और डर से पगला गया था। चाँद की रोशनी में बैरी उसकी ओर कूदता-फांदता आया होगा। यह एक स्वाभाविक गलती थी कि उसने बैरी को भालू समझ लिया। वह जंगली जानवरों से डरता होगा।''

"मैं जानता हूँ," वर्नर ने ठंडी साँस ठोड़ते कहा। "मैं उसे दोष नहीं देता, पर सोच रहा हूँ कि बैरी को कैसा लगा होगा। वह तो प्यार से आगे बढ़ा और उसे चाकू से बार-बार भोंका गया।"

फादर बैनेडिक्ट निरुत्तर हो गए। वे दिलासा देने को क्या कहें, उन्हें सूझा ही नहीं।

उस पूरी रात और अगले पूरे दिन बैरी बिना हिले-डुले पड़ा रहा। वर्नर ने उसकी पट्टियों को कस कर बांधा था। वह बैरी का सिर अपने गोद में लिए घंटों-घंटों बैठा रहा। दूसरे दिन शाम को जाकर बैरी ने हरकत की। उसकी आँखें खुलीं। उसकी पूंछ उठी और कम्बलों के बिछौने पर पड़ी। उसने अपना मुँह खोला और वर्नर की बाँह को हल्के से अपने जबाड़ों में थाम लिया।

अगली सुबह तक वह थोड़ा पानी और खाने के कुछ निवाले निगल सका। उस शाम तक ज़ाहिर हो गया कि वह मरने को तैयार नहीं था।

सेंट बर्नार्ड मॉनेस्ट्री की प्राचीन दीवारें में खुशी गूंज उठी।

दो साल बाद गाँव में शान्त सेवा निवृत्ति बिता बैरी, बुढ़ापे से मरा। उसके शरीर को स्विस संग्रहालय में प्रदर्शित किया गया।

बैरी की मृत्यु के सौ साल बाद सेंट बर्नार्ड मठ में फिर एक ऐसा कुत्ता रहा जिसे बैरी का नाम दिया गया। उसके बाद से यह परंपरा बन गई कि बैरी का सम्मानित नाम सबसे उम्दा कुत्ते को ही दिया जाता है।

वहाँ आज भी एक बैरी है।

एक नौजवान बर्फ में खो जाता है - संभावना यह भी है कि वह कहीं बर्फ के नीचे दफ्न हो। बचाव दल के कुत्ते चाँद की रोशनी में ढ़लान पर दौड़ते हैं। ये लहीम-शहीम सेंट बर्नार्ड कुत्ते, जिनकी तेज़ नाक उन्हें बर्फ के नीचे दबे इन्सानों को तलाशने देती है, और उनके मज़बूत पंजे बर्फ को खोदने देते हैं।

बैरी बचाव दल का नेतृत्व करता है। उसने 40 से अधिक लोगों की जाने बचाईं हैं। पर आज वह खुद अपनी जान जोखिम में डाल रहा है। खोया हुआ नौजवान डरा हुआ है। उसके पास एक छुरी है। झुटपुटे में वह कुत्ते को जंगली जानवर समझ बैठता है!

यह बैरी की सत्यकथा है, जो सबसे बहादुर सेंट बर्नार्ड था।